विषय: "सबके साथ सबका विकास"।

(रूपरेखाएँ: सबके साथ सबका विकास, त्याग का मनोभाव, विकास में विद्याभ्यास का प्राधान्य, एकता सबके विकास के लिए, विवेचन कभी नहीं करना, गरीबी और टेक्नोलोजी, विजय और सहकरण, व्यक्तित्व विकास, सामूहिक माध्यमों, मनुष्यता, विकास का परिणाम) (ये सब घटनाओं के ज्ञान से हमें "सबके साथ सबका विकास" - यह प्रस्तावना को अंभव्य कर सकते हैं।

"सबके साथ सबका विकास"

• सबके साथ सबका विकास: आज के युग में सबके साथ सबका विकास होना आवश्यक है क्योंकि आज के युग में जीवित चक्र का चलन जल्दी-जल्दी हो रहे हैं। विकास के लिए बहुत सी घटनाएँ हैं। सबके विकास के लिए सबसे प्रमुख आवश्यकता विद्याभ्यास है। एक अनपढ़ व्यक्ति के जीवित में कभी नहीं विकास होते हैं। सबके साथ सबका विकास होने से राष्ट्र में एकता होते हैं और वह नागरिकों का राष्ट्र उन्नति प्राप्त करते हैं। इसलिए हर व्यक्ति को अपने-अपने राष्ट्र के उन्नति के लिए सबके साथ सबका विकास होने के लिए प्रयत्न करना आवश्यक है,

• त्याग का मनोभाव :- हर राष्ट्र में सबके साथ सबका विकास होने से ही वह राष्ट्र उन्नति प्राप्त करते है। इसलिए सभी के विकास के लिए त्याग का मनोभाव होना है। मनुष्य अपने-अपने स्वार्थ तात्पर्यों के साथ जी लगा तो वहाँ सभी के विकास कैसे संभव होगा? इसलिए मानव में त्याग का मनोभाव होना आवश्यक है। त्याग का मनोभाव हुआ तो वह अन्यों के लिए जीने का भी प्रयत्न करेगा और इसीतरह मनुष्यों के बीच एकता बढ़ जाएगा और वह एक ही तरह उन्नति प्राप्त करने के लिए ~~प्रयत्न~~ प्रयत्न करेगा। .

त्याग के मनोभाव नहीं तो वहाँ परोपकार नहीं संभव होते है। इसलिए सबके साथ सबका विकास होने के लिए मानव के बीच त्याग का मनोभाव का पालन करके एकता बढ़ होने को आवश्यक माना है।

• विकास में विद्याभ्यास का प्राधान्य :- विकास में विद्याभ्यास का प्राधान्य बहुत -सी होते है। हर व्यक्ति को अपने- अपने और अपने राष्ट्र की उन्नति के लिए प्रयत्न करने को विद्याभ्यास की आवश्यकता होते है। अनपढ़ व्यक्तियों का समूह रहने वाले राष्ट्रों में कभी नहीं विकास होते है। एक अनपढ़ व्यक्ति का जीवन सदा एक ही तरह होते रहते है। उसके जीवित कैं कभी नहीं बदल जाती। इसलिए सबके साथ सबका विकास होने के लिए पहले से सबको विद्याभ्यास का प्राधान्य समझा देना है। विद्याभ्यास प्राप्त करने से राष्ट्र में गरीबों को दिखाई पड़ना कम होते है, सबो को काम करके पैसा संपादित करने को सकते है, आदि से सबको जीवित संतुष्ट और विकसित होते है। इसी तरह सबके साथ सबका विकास होने के लिए विद्याभ्यास की ओर ख्याल रहना सबसे बड़ी आवश्यक है। हर व्यक्तियों के विकास में अपना - ज्ञान प्रमुख स्थान लेते है। अज्ञानी व्यक्ति को कभी नहीं उन्नति प्राप्त करने को सकते है। इसलिए मानव के बीच में एकता बढ़ाने के लिए और सबका विकास एक ही तरह उन्नति प्राप्त करने के लिए विद्याभ्यास को प्राप्त करना है।

एकता सबके विकास के लिए :- सबके विकास के लिए एकता एक आवश्यक ~~सब~~ घटना है। सबके साथ सबका विकास होने को सभी व्यक्तियों का सहकरण होना आवश्यक है। मानव के बीच परोपकार, सहायता करना आदि के अलावा विकास नहीं होते है। इसके कारण विकास के लिए मानव के बीच एकता का सोच होना है।

मानव के बीच एकता नहीं तो वहाँ वे वर्ण, विद्याभ्यास, वर्ग आदि के आडिस्थान में विवेचन करेंगे। परन्तु मनुष्य के बीच एकता का सोच है तो वह कभी नहीं किसी तरह से विवेचन करेगा. वह सदा सबके उन्नति के लिए प्रयत्न करेगा।

मनुष्य को दूसरों के लिए भी जीने के लिए एक ही सोच मन में होना है, वह एकता का है। इसके अलावा सभी का विकास कभी नहीं होते है। एकता का विचार मानव में नहीं तो वह अपने अपने स्वार्थ तात्पर्यों के लिए ही ~~प्रय~~ प्रयत्न करेगा। इसलिए मनुष्य को अन्यों के लिए उपकार, सहायता, त्याग आदि करने के लिए एकता का विचार होना आवश्यक है।

• विवेचन कभी नहीं करना:- एक शब्द में कोई घटनाओं के अस्तित्व में विवेचन होते तो वहाँ विकास नहीं होगी, क्योंकि विकास के लिए पहले यों सोच होना आवश्यक है कि सभी मानव एक है। जाति, वर्ग, वर्ण आदि के अस्तित्व में नहीं ज्ञान के अस्तित्व में ही विकास होते है।

पहले से हर व्यक्ति में विवेचन का मनोभाव का नाश करना है। पूर्वकालों में जाति-प्रथा का स्थान बहुत बड़ा था। उस समय मानव के वर्ण के घटना पर ही उसे विद्याभ्यास मिलता था। अवर्ण-सवर्ण आदि उस युग के जाति-प्रथा के घटनाएँ था। परन्तु अब जैसे कोई उम्मीद नहीं है, परन्तु पूरी तरह है वह घटना मानव के मन में से नहीं जा सकी। सबके के साथ सबका विकास के लिए कई तरह की विवेचन के अलावा सभी व्यक्तियों को तुल्य स्थान-मान देकर जीना है। विद्याभ्य वर्ण के अस्तित्व कभी नहीं करना है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए हर व्यक्तियों को एक ही हक होते है। इसी तरह सबके साथ सबका विकास के लिए विवेचन को नाश करना आवश्यक है।

• गरीबी और टेक्नोलोजी :- विकास के अदिस्थान गरीबी का नाश करना ही है। राष्ट्र में सबके विकास होने तो गरीबों के जीवित - गति में भी बदल आता है। एक राष्ट्र के सभी व्यक्तियों के जीवित स्थिति में उन्नति होने से ही हमें सबके साथ सबका विकास हुआ कह सकते है। इसलिए राष्ट्र के उन्नत स्थान में ~~बैठने वाल~~ बैठने वाले व्यक्तियों को गरीबों के विकास के लिए पैसे से, तन से, मन से आदि सहायता करना है। परस्पर- सहायता से हमें नीचे अवस्था में रहने वालों को भी उन्नति प्राप्त करने को सकते है।

आज के युग में टेक्नोलोजी का ~~अ~~ उपयोग से ही विकास होते है, इसलिए हर व्यक्तियों को टेक्नोलोजी के बारे में ज्ञान होना आवश्यक है। पूर्वकाल में मिलन का मयी दोस्ती से होते थे। परन्तु आज ~~अब~~ टेक्नोलोजी के कारण मिलन अंतर्जाल के उपयोग से संभव होते है। इसलिए सबके साथ सबका विकास होने के लिए मानव को सभी के बारे में ज्ञान प्राप्त करना है।

• विजय और सहकरण :- सबके साथ सबका विकास होने के लिए विद्याभ्यास और नम्रता दोनों आवश्यक घटनाएँ है। मानव को विद्याभ्यास के समय सभी व्यक्तियों से पहले विजय प्राप्त करने के लिए मन में इच्छा और आत्मविश्वास होना आवश्यक है। परन्तु मानव के जीवित में उसे स्पर्धा और ईर्ष्या होना एक अच्छे बात नहीं है। वहाँ उसे सबके साथ सहकरण करके जीना है। जीवित में मनुष्य को अन्यों के ऊपर आधिपत्य स्थापित करने की इच्छा हुए तो वहाँ स्पर्धा का आरंभ होगा। इसलिए मानव को परोपकार करके जीना है। सभी व्यक्तियाँ सभी के साथ सहकरण करके जीने को तैयार है तो वह राष्ट्र उन्नति में अधिक रहूँगा।

मनुष्य अपने आत्म में स्पर्धा किये तो • जीवित में जैसे नहीं है वह नम्रता के ऊपर पत्थर डालने के जैसे होते है। वह टूट हो जाते है। इसलिए सभी व्यक्तियों को सहकरण से रहकर सबका विकास के लिए जीना है।

• व्यक्तित्व विकास:- हर राष्ट्र के विकास के प्रधान कारण वहाँ के नागरिक ही होते है। इसलिए हर राष्ट्रों के विकास के लिए अच्छे व्यक्तित्ववाले नागरिकों की आवश्यकता है। व्यक्तित्व रहित व्यक्ति में अन्यों के विचार कभी नहीं होता है।

नागरिक उत्साह होनेवाले व्यक्तियाँ सदा अन्यों के लिए भी प्रयत्न करेंगा। इसलिए सभी व्यक्तियों को ज्ञान प्राप्त करके अन्यों के साथ जीकर अपना-अपना व्यक्तित्व के विकास करने के लिए सदा ख्याल रखना है।

• सामूहिक माध्यमों:- आज के युग में अधिक व्यक्तियों को मिलन यानी दूसरी सामूहिक माध्यमो द्वारा ही होते है। वह एक अच्छा बात है। परन्तु उसके बारे में ज्ञान न होने-वाले व्यक्तियों को तब कष्टता सहने को संभव्य होता है। इसलिए सामूहिक माध्यमों को दूर रखकर मानव को सबके साथ बोलकर, खेलकर दोस्ती बढ़ाकर सबके बीच आत्मबन्ध का निर्माण करना है। उससे सबका विकास एक साथ ही संभव्य होगा।

2017-18 … 58

• मनुष्यता :- मानव के बीच मनुष्यता ~~है~~ ~~है~~ नहीं तो वहाँ स्वार्थ तात्पर्य का उन्नति होगी। इसलिए हर मानव में मनुष्यता होना आवश्यक है। सबके साथ सबका विकास होने के लिए सबों के बीच स्नेह होना है और वहाँ ही मनुष्यता होगा।

• विकास का परिणाम :- क्या है विकास? वह एक तरह की उन्नति है। वह केवल जीवित स्थिति से ही नहीं स्वभाव से ही संभव होते है। सबके साथ सबका विकास होने के लिए सबी को एक ही तन-मन के संकल्प से प्रयत्न करना है। मनुष्य में अलग-अलग अभिप्राय उत्पन्न होगी। परन्तु उस उनमें से अच्छे और बुरे का विवेचन करके अच्छे बातों को चुनकर एक साथ ही विकास के लिए प्रयत्न करना है। यही विकास संभव होगा।

उपसंहार :- आने वाले युग के लिए "सबके साथ सबका विकास" - यह प्रस्तावना संभव्य करना आवश्यक है। रूपरेखाओं में दिये घटनाओं के बारे में ज्ञान लेने से हर व्यक्तियों को विकास के लिए प्रयत्न करने को सकते है। "सबके साथ सबका विकास", यह प्रस्ताव को समर्थन करने में यह उपन्यास मदद होते है। इस उपन्यास में कहे गये प्रस्तावनाओं सबके विकास साकसाथ होने के लिए सहायता करेगा।

"सबके साथ, सबका विकास
यह होना है कल के हृदयों में।"

कल आने वाले हृदयों में "सभी एक ही है" - यह सोच होने के लिए आज के हर व्यक्तियों को ख्याल रहना है। 'सभी मानव एक ही है' - यह सोच से ही मनुष्य में अच्छा संस्कृति का प्रभाव होगा।